copy

सरसंघचालक :
मा. स. गोळवलकर
सरकार्यवाह :
एकनाथ रानडे

॥ श्री ॥

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

केन्द्र–नागपुर

दूरभाष क्र. २९०६
पत्रव्यवहार का पता :–
मा. स. गोळवलकर
डॉ. हेडगेवार भवन
नागपुर २

पत्र क्रमांक C 30

दि. 29-8-61

मान्यवर श्री. लालबहादुर शास्त्री जी —

सादर वन्दे।

गत कई वर्षों से पंजाब में एक समस्या खड़ी है। प्रारंभ से ही असंदिग्ध रूप से नीति निर्धारण न करने से दिन प्रतिदिन वह अधिकाधिक जटिल होती गयी है। अब तो आमरण अनशन का निश्चय कर श्रीमान मास्टर तारासिंह जी बैठे हैं जिससे समस्या और उलझन कर रही है। उनके अनशन के प्रतिवाद में स्वामी रामेश्वरानन्द जी भी आमरण अनशन का निश्चय कर बैठे हैं। व्यावहारिक क्षेत्र में अनशन का उपयोग अच्छा नहीं लगता। पर गत कई वर्षों से यह एक सामान्य राजनैतिक शस्त्र सा बनाया गया है। इससे लाभ होने की आशा नहीं। परन्तु यह आगे सबको समझाकर योग्य वायुमण्डल बनाने की बात है।

आज की प्रमुख बात इन दोनों श्रद्धास्पद महानुभावों को अनशन से परावृत्त करना और परिस्थिति पर यथार्थवादी विचार करने के लिये अनुकूल वायुमण्डल बनाना है। अनशन के बलात्कार के सम्मुख न झुकते हुए भी अनशनकारी महानुभावों का समुचित आदर कर उन्हें परावृत्त करना आप जैसे मँजे हुए राजनीतिज्ञों के लिये कठिन नहीं है। मान्यवर प्रधानमंत्री महोदय ने तथा आपने इतना कर स्पष्ट नीति विचार का परिचय देकर पंजाब के अविभाजित स्वरूप को बनाये रखने का निश्चय प्रकट किया है। पंजाबी सूबा हिन्दी दोनों का

सबको आदर पूर्ण व्यवहार, अपनेपन, आत्मीयता का आश्वासन भी दिया है। इससे विश्वास रखनेसे, किसी प्रलोभनमें न आकर सांप्रदायिक नाजायज समझौतोंको उसे प्रश्रय तथा प्रोत्साहन न देनेसे भी इस समय मार्ग निकल सकेगा।

साथ ही 'सिख और हिन्दु' ऐसे भेदभाव निर्माण करने-वाले शब्दप्रयोगोंका सर्वथा त्यागकर 'हिन्दु' शब्दमें शैव वैष्णवादि जैन बौद्ध सिख आर्यसमाजी आदि सबका अंतर्भाव है इस सत्यके अनुरूप ही बोलने लिखनेमें सत्यानुकूल सावधानी बरतनेकी दक्षता अपने सब कार्य करनेवाले महानुभाव सज्जनोंको ऐसा सफल प्रयत्न करें यह भी प्रार्थना है।

शेष आपकी राजनीतिज्ञता पर विश्वास रखकर हमलोग विश्वास कर रहे हैं कि पंजाबकी गुत्थी सुलझ जाये ऐसा दृढतापूर्वक पग आप उठायेंगे और हमारे गुरुओंके प्राणोंकी रक्षा करेंगे।

भवदीय -

मा. स. गोळवलकर